National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 1; Issue 4; September 2016; Page No. 01-06

मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन एवं कृषि उत्पादकता का स्वरूप : एक अध्ययन

संजीव कुमार खटीक

शोधार्थी, वाणिज्य एवं व्यवसयाय अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

भारत कृषकों का देश हैं। इस देश की लगभग 68 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि कार्य में लगी हुई है। भारत एक विकासशील राष्ट्र है। किसी भी राष्ट्र को विकसित राष्ट्र तब कहा जा सकता है जब उस देश का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी प्रकार से विकास हुआ हो अर्थात् राष्ट्र में क्रांति का क्षेत्र काफी विस्तृत हो। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने, भारतीय नागरिकों के जीवन स्तर को ऊँचा करने हेतु कृषि पर विशेष ध्यान देना होगा। भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, क्योकि राष्ट्र की आर्थिक संरचना में कृषि एक आधारभूत स्तंभ का उत्तरदायित्व निभाती है। कृषि भारतीय अर्थव्यस्था का सर्वप्रमुख व्यवसाय है। यह प्रदेश के कई उद्योगों के लिये कच्चे पदार्थ की आपूर्ति और कई उद्योगों के उत्पादन की माँग का आधार है। यह देश की दो तिहाई जनसंख्या की आजीविका का साधन और विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति के बाद का राष्ट्रीय सर्वाधिक राशि आय में योगदान करने वाला क्षेत्र है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश में कृषि उत्पादन एवं कृषि उत्पादकता के स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: मध्य प्रदेष, कृषि, कृषि विकास, खाद्यान्न, घरेलू उत्पाद।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश एक ऐसा राज्य है जहाँ प्राकृतिक संसाधन जिनमें वन, खनिज, पत्थर और नदियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह दूसरा बड़ा राज्य है और जनसंख्या की दृष्टि से देश का छठा सबसे बड़ा राज्य है। 308 हेक्टेयर के भौगोलिक क्षेत्र में 72 मिलियन से अधिक लोग निवासरत है। जिसमें से लगभग 72 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। जिसमें विशेष रुप से लगभग 35 प्रतिशत आदिवासी और दलित हैं। राज्य को ग्यारह कृषि जलवायु, क्षेत्र, पॉच फसल क्षेत्र और विभिन्न भूमि के उपयोग, मिट्टी, वर्षा और जल संसाधनों के आधार पर 51 जिलों में बांटा गया हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख घटक कृषि है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के विशिष्ट योगदान के परिप्रेक्ष्य में राज्य कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के विकास प्रक्रिया में सकारात्मक वृत्ति अपेक्षित हैं। जनगणना 2011 के अनुसार प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में लगभग तीन चौथाई आबादी है जो पूर्णतया कृषि पर निर्भर है। अन्य राज्यों की तुलना में अनुसूचित जाति (16.7 प्रतिशत) एवं अनुसूचित जनजाति (20.27 प्रतिशत) है तथा लघु कृषक (27.15 प्रतिशत) और सीमांत कृषक (40.45 प्रतिशत) है जो कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है। अतः कृषि और संबंधित क्षेत्रों में उच्च विकास दर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये एवं उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि के लिए केन्द्र एवं राज्य की योजनाओं को कार्यान्वित करते समय अधिक सर्तकता की आवश्यकता होगी।

जनसंख्या, आर्थिक शक्तियॉ, पशुधन एवं विभिन्न प्रकार की संस्थायें जो भूमि उपयोग की औपचारिक या अनौपचारिक रूप से हाल के वर्षो में राज्य में भूमि उपयोग में तेजी से बदलाव आये हैं। प्राकृतिक कारकों के कारण भी भूमि उपयोग के स्वरूपों में बदलाव हुआ है। भूमि उपयोग में अंधाधुंध परिवर्तन ने भूमि के स्थायी और सर्वोत्तम उपयोग पर प्रभाव डाला है। जिसके फलस्वरूप बेतरतीब विकास हुआ है जो कि आर्थिक–सामाजिक और पर्यावरणीय अर्थ में भी पूर्णतः असफल रहा है। मध्यप्रदेश राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्र 308245 वर्ग कि0मी0 है जिसमें से शुद्ध बोया गया क्षेत्र लगभग 150.78 लाख हेक्टेयर जो कि 49.05 प्रतिशत है। सिर्फ 0.24 हेक्टेयर प्रति व्यक्ति भूमि ही विभिन्न कृषि गतिविधियों हेतु उपलब्ध हैं जिनमें खाद्यान्न, तिलहन, दलहल, और अन्य फसलों की खेती शामिल हैं।

शोध कार्य के उद्देष्य

- कृषि विकास की संभावना का अध्ययन करना।
- मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन एवं कृषि उत्पादकता के स्वरूप का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र

शोध अध्ययन का क्षेत्र सम्पूर्ण मध्यप्रदेश को चयनित किया है।

समंक संकलन

शोध कार्य के लिए द्वितीयक समंकों को विभिन्न स्त्रोतों जैसे जर्नल, रिपोर्टस, प्रतिवेदन, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से एकत्रित किया गया एवं वार्षिक प्रतिवेदन तथा इन्टरनेट बेवसाइटों का भी प्रयोग समंकों के संकलन हेतु किया गया है।

विधि

प्रस्तुत शोध 'सर्वेक्षण विधि' पर आधारित है।

उपकरण प्रविधियाँ

साक्षात्कार,एवं सांख्यिकी विधियॉ

आंकड़ो का सारणीयन एवं व्याख्या : मध्यप्रदेश में प्रमुख अनाज फसलों का उत्पादन

खाद्यान्न में अनाज, दलहन, तिलहन और व्यवसायिक फसलें शामिल हैं। भारत दलहन का सबसे बड़ा उत्पादक है और गेहूं, चावल, गन्ना कपास और तिलहन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। इन फसलों के उत्पादन और उत्पादकता में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य साबित हुआ है। राज्य ने सन् 2011–12 की तुलना में सन् 2012–13 में अनाज की 30.8 प्रतिशत, दलहन में 40.95 प्रतिशत और तिलहन में 36.25 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज कराई है। इस दौरान राज्य में प्रमुख खाद्यान्न फसलों के क्षेत्र में पर्याप्त वृद्धि

हुई है। सबसे ज्यादा बढ़ोत्तरी गेहूं में देखी गई थी, इसके बाद क्रमशः चावल और मक्का में वृद्धि हुई। कृषि भूमि के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप खाद्य उत्पादन में वर्ष 2012–13 में वर्ष 2011–12 के मुकाबले 19.98 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। प्रमुख अनाज, दलहन एवं तिलहन का विश्लेषण निम्न तालिकाओं द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका 1: मध्यप्रदेश में प्रमुख अनाज फसलों का क्षेत्र, (क्षेत्र 000 हेक्टर, उत्पादन 000 मी0टनए उपाज कि0ग्रा0 / हेक्टर)

फसलें	वर्ष 2010–11			वर्ष 2011–12			वर्ष 2012–13			वर्ष 2013–14		
	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज
धान (चावल)	1583	1773	1182	1703	2280	1413	1801	3113	1825	1930	5383	2789
मक्का	848	1340	1590	860	1324	1551	865	2389	2786	846	2224	2629
गेहूं	4645	9227	2073	5261	14544	2770	5613	16518	29488	5976	17478	2925
कुल अनाज	7076	12340	4845	8739	19312	2210	9094	23212	2553	9518	26162	2749

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2014–15

चावल
राज्य में चावल के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में प्रदेश ने 2012–13 (3113 हजार मैट्रिक टन) की अपेक्षा 2013–14 में (5283 हजार मैट्रिक टन) 72.92 प्रतिशत अधिक उत्पादन का एक कीर्तिमान स्थापित किया है। ऐसा संकर किस्मों के बीज एव नई तकनीक के प्रयोग से संभव हुआ है। राज्य में संकर और स्तरीय (बासमती) चाँवल उत्पादन की विपुलता ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और रोजगार के विकास में काफी महत्वपूर्ण होगी। वर्तमान में देश में चाँवल उत्पादन में राज्य का चौदहवाँ स्थान है। लेकिन, गुणवत्ता के बीज और विकसित तकनीक (एस.आर.आई. पद्धति) का उपयोग करते हुए संकर खेती के क्षेत्र में बढ़ोतरी एवं देश के चावल उत्पादन में राज्य की स्थिति में और सुधार किया जा सकता है।

मक्का
मध्यप्रदेश में मक्का खेती के क्षेत्र में वृद्धि वर्ष 2011–2012 में 860 हज़ार हेक्ट. से वर्ष 2012–13 में 865 हज़ार हेक्ट. हुई है। परंतु 2013–14 में मामूली गिरावट दर्ज की गई है जो (–2.19:) है इसी प्रकार उत्पादन में भी वर्ष 2012–13 से घटकर 2013–14 में 2224 हज़ार मीट्रिक टन जो 0.69 प्रतिशत कम है। परंतु उत्पादकता में 5. 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह उच्च उपजाऊ किस्म और संकर बीज परिवर्तन से संभव हुआ है।

गेहूँ
मध्यप्रदेश में गेहूँ उत्पादन में 2010–2011 के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति रही जो क्रमशः 0.57 प्रतिशत, 1.39 प्रतिशत और 0.73 प्रतिशत रही। हालांकि इस बढ़े हुए उत्पादन के लिये क्षेत्र वृद्धि, सिंचाई सुविधाओं के साथ बीज उपचार, उच्च किस्म, रतुआ (रस्ट) प्रबंधन और ग्रीष्मकालीन अवधि के दबाव से बचने के लिये बुवाई की उपयुक्त तरीकों का प्रबंधन आदि कारक भी जिम्मेदार हैं। प्रदेश के शरबती गेहूं की एक अलग पहचान है, पूरे देश में प्रदेश का शरबती गेहूं सीहोर, विदिशा बासोदा आदि के नाम से बिकता है। वर्ष 2013–14 में 6.87 लाख हेक्टर में लिया गया है। यह गेहूँ मुख्य रूप से चपाती के रूप में उपयोग किया जाता है। इसका उत्पादन मुख्य रूप से सीहोर, विदिशा, गुना अशोकनगर, सागर, शाजापुर आदि जिलों में होता है।

दलहन
प्रदेश में दलहन उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने किसानों को दलहन उत्पादन के लिए प्रेरित करने हेतु कई प्रोत्साहन दिये हैं। और दलहन की उत्पादकता भी विशेष रूप से 577 कि0ग्रा0 प्रति हेक्ट0 (2004–05) से बढ़कर 689 कि0ग्रा0 प्रति हेक्ट0 (2011–12) हुई है।

तालिका 2: मध्यप्रदेश में दलहनों का उत्पादन क्षेत्र, (क्षेत्र 000 हेक्टर)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	पिछले वर्षों से प्रतिशत वृद्धि / कमी	विकास दर	2013–14
अरहर	642.13	536.21	458.49	(-) 14.49	8.51	464
चना	2888.40	2629.79	2722.41	(+) 3.52	(-) 3.91	3482

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2014–15

मध्यप्रदेश दोनों मात्रा और गुणवत्ता में दालों के उत्पादन (तुअर, चना) के लिये जाना जाता है। प्रमुख दालों की खेती के क्षेत्र में कमी के बावजूद राज्य ने उत्पादन में 4.05 प्रतिशत की उत्पादन दर से पर्याप्त वृद्धि दर्ज की है।

तालिका 3: मध्यप्रदेश में दलहन का उत्पादन, (000 मीट्रिक टन)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	पिछले वर्षों से प्रतिशत वृद्धि / कमी	विकास दर
अरहर	205ण62	338ण22	463	(-) 5.83	12.04
चना	265ण63	2844ण65	3247	(+) 16.75	3.24

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2014–15

राज्य ने चने के उत्पादन में प्रथम स्थान और तुअर के उत्पादन में राज्य का तीसरा स्थान है। इसके अलावा दालों और खास तौर पर काली और पीली बटरी, गाड़रवारा तुअल दाल और गुलाबी चना उत्पादन में राज्य अपनी खास पहचान रखता है। राष्ट्र और राज्य के हितार्थ उन्नत किस्मों के गुणवत्ता वाले बीज की उपलब्धता और एकीकृत कीट प्रबंधन के विस्तार के माध्यम से दलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। तुअर की पंक्तिबद्ध बुवाई और फली पकने के समय नमी प्रबंधन उपज स्तर की वृद्धि में लाभकारी हो सकता है। उड़द, मूंग और लोबिया की ग्रीष्मकालीन खेती किसानों को आय और रोजगार बढ़ाने में सहायक होगी। 2012–13

की अपेक्षा 2012–13 में सम्पूर्ण दलहन की उत्पादकता घटी है परंतु क्षेत्रफल एवं उत्पादन में वृद्धि क्रमशः 18.25 प्रतिशत एवं 7.72 प्रतिशत दर्ज की गई है।

तिलहन

खाद्य तेलों का उपभोग लगातार बढ़ रहा है। जो घरेलू उत्पाद से अधिक है और जिसके फलस्वरूप भारी आयात की आवश्यकता होती है। देश में लगभग 9.2 मिलियन टन खाद्य तेलों का आयात किया है जो घरेलू खपत का लगभग आधा है। तिलहन के अंतर्गत बड़ी संख्या में अनाज जैसे सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, कुसुम, सूरजमुखी, अलसी, तिल, रामतिल, नारियल, खजूर आते हैं। मध्यप्रदेश में सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तिल, रामतिल प्रमुख हैं। राज्य का सोयाबीन उत्पादन में प्रथम और मूंगफली उत्पादन में सातवां स्थान है। खरीफ के मौसम में सोयाबीन सबसे बड़े क्षेत्र में बोया जाता है। प्रदेश में 2012–13 की अपेक्षा 2013–14 में मूंगफली का क्षेत्रफल घटने के बावजूद इसका उत्पादन 4.46 प्रतिशत और उत्पादकता 17.4 प्रतिशत में वृद्धि अंकित की गई है। ऐसा गुणवत्ता बीज एवं फसल में तकनीक के प्रयोग से संभव हुआ है। सोयाबीन जो क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से प्रदेश की सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। 2013–14 में प्रतिकूल मौसम के फलस्वरूप 2012–13 की अपेक्षा क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक गिरावट देखी गई है। इसका प्रभाव सम्पूर्ण तिलहन के उत्पादन पर दर्ज किया गया है। मध्यप्रदेश में तिलहन उत्पादन राज्य की अर्थव्यवस्था और प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो किसानों की आय और रोजगार सृजन को बढ़ाता है।

तालिका 4: मध्यप्रदेश में प्रमुख तिलहनों का उत्पादन क्षेत्र, (क्षेत्र 000 हेक्टर)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	पिछले वर्षों से प्रतिशत वृद्धि/कमी	विकास दर
रेपसीड और सरसों	726.86	663.58	704.40	762	(+) 6.15	(-) 3.51
सोयाबीन	5552.17	5786.27	6186.45	6164	(+) 6.92	4.28

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2014–15

कपास और गन्ना

कपास और गन्ना देश की और मध्यप्रदेश की भी महत्वपूर्ण व्यवसायिक फसलें हैं। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा और मध्यप्रदेश का भाग गन्ना उत्पादन में ब्राजील के बाद दूसरा स्थान है। उत्तरप्रदेश महाराष्ट्र, तमिलनाडु गन्ना उत्पादन के अग्रणी राज्य है जिनका क्रम क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय है। वहीं मध्यप्रदेश का गन्ना उत्पादन में ग्यारहवां स्थान है। मध्यप्रदेश में वर्ष 2012–13 की तुलना में 2013–14 में क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है जो क्रमशः 35.18 प्रतिशत, 44.20 प्रतिशत एवं 6.47 प्रतिशत है। प्रदेश में गन्ना विकास का महत्वपूर्ण सूचक है। उत्पादन क्षेत्र में अल्प कमी के बावजूद 276.01 हजार मीट्रिक टन का रिकार्ड उत्पादन हुआ है।

तालिका 5: मध्यप्रदेश में प्रमुख व्यवयासिक फसलों का क्षेत्र, (क्षेत्र 000 हेक्टर)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	पिछले वर्ष से प्रतिशत वृद्धि/कमी	विकास दर
गन्ना	48	50	54	73.00	(+) 35.18	6.58
कपास	593.20	623.79	607	514.00	(-) 15.32	(-) 0.93

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2014–15

तालिका 6: प्रमुख व्यावसायिक फसलों का उत्पादन, (000 मीट्रिक टन)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	पिछले वर्ष से प्रतिशत वृद्धि/कमी	विकास दर
गन्ना	196.45	196.94	276.01	(+) 40.15	12.77
कपास	1017.55	1030	1173.27	(+) 0.79	16.10

स्त्रोतः आयुक्त, भू अभिलेख 2013–14

ऊतक संवर्धन पौधों और अनुकूल आदानों के साथ–साथ उपलब्धता और समय पर एकीकृत कीट प्रबंधन का अमल राज्य में गन्ने के उत्पादन और उत्पादकता को वृद्धि की ओर प्रवृत्त करता है। मध्यप्रदेश में कपास मुख्य रूप से निमाड़ घाटी, मालवा पठार और सतपुड़ा पठार में उगाई जाती है। 2012–13 की अपेक्षा 2013–14 में कपास के क्षेत्रफल घटने के बावजूद कपास की उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि दर्ज की गई है। प्रदेश में बीटी कॉटन की विस्तृत उपलब्धता और ड्रिप सिंचाई से कपास उत्पादन में वृद्धि की भारी व्यापकता है। राज्य पर्यावरण के अनुकूल कपास (रंगीन कपास की एक किस्म जिसकी खेती अलग से की जा सकती है) के विकास में अपने अद्वितीय योगदान के लिये जाना जाता है।

फल

वर्ष 2012–13 में कुल फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 2.05 लाख हेक्टर एवं 56.25 लाख मीट्रिक टन रहा। वर्ष 2013714 में कुल फसलों का क्षेत्रफल डत्पादन क्रमशः 2.11 लाख हेक्टर एवं 57.81 लाख मीट्रिक टन रहा। वर्ष 2014–15 में कुल फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 2.17 लाखा हेक्टर 59.43 लाख मीट्रिक टन रहा। प्रमुख फलों के क्षेत्र उत्पादन एवं वर्षवार विवरण तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका 7: मध्यप्रदेश में फल उत्पादन का क्षेत्र, (हेक्टेयर में)

फल	2010–11	2011–12	2012–2013	2013–14	2014–15
केला	38085	24783	25757	26272	26798
आम	16728	18332	25183	25435	25689
मौसंबी/संतरा	38638	45632	58046	61017	64167
पपीता	1965	10186	12536	13163	13821
कुल फल	132380	163864	204648	210532	216717

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

तालिका 8: मध्यप्रदेश में फलों उत्पादन, (लाख मीट्रिक टन में)

फल	2010–11	2011–12	2012–2013	2013–14	2014–15
केला	17.20	13.79	17.01	17.35	17.70
आम	1.51	1.75	3.76	3.80	3.84
मौसंबी / संतरा	6.94	6.65	9.53	10.04	10.57
पपीता	2.27	2.74	4.13	4.34	4.55
कुल फल	33.62	36.01	56.25	57.81	59.43

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

साग–सब्जी

मध्यप्रदेश में उत्पादन की दृष्टि से प्रमुख सब्जियों की फसलें हैं– आलू, प्याज, टमाटर और हरी फलियाँ आदि हैं। हालांकि यहॉ किसान अन्य फसलें जैसे भिण्डी, फूलगोभी, पत्ता गोभी, अरबी, लौकी, करेला, मूली, गाजर, ककड़ी, पालक, शिमला मिर्च, परवल, सेम, शकरकंद, सुरन आदि की भी खेती करते हैं। कई सब्जियॉ अब गैर मौसम में बाजार में लाभकारी प्रतिफल के लिये सुरक्षित खेती अर्थात हरित गृह पॉली हाउस, नेट हाउस आदि में विकसित हो रही है। खेती की यह पद्धति किसानों की अर्थव्यवस्था और कौशल श्रम रोजगार को बढ़ावा देती है। पराबैंगनी प्रकाश हरित गृहों पर स्थायी रूप से आच्छादित होकर हरितगृहों द्वारा सौर ऊर्जा के दोहन में सहायता करती हैं जिसके परिणामस्वरूप अच्छी फसल में ऊर्जा और वृद्धि होती है, इसलिए यह उपयोगी है। वर्ष 2012–13 में फूल साग सब्जी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 6.04 लाख हेक्टेयर एवं 124.53 लाख मीट्रिक टन रहा है। वर्ष 2013–14 में कुल साग सब्जी का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 6.22 लाख हेक्टर एवं 128.41 लाख मीट्रिक टन रहा। वर्ष 2014–15 में कुल साग सब्जी का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 6.41 लाख हेक्टेयर एवं 132.47 लाख मीट्रिक टन रहा । प्रमुख साग सब्जी फसलों के क्षेत्र उत्पादन एवं उत्पादन का वर्षवार विवरण क्रमशः तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका 9: मध्यप्रदेश में सब्जी फसलों का क्षेत्र (हेक्टेयर में)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
आलू	61967	87975	108874	109963	111062
शकरकंद	5139	2180	2507	2758	3033
प्याज	58306	899555	111725	117311	123177
मटर	22842	47303	53446	56118	58924
टमाटर	27753	55311	62589	65718	69004
फूल गोभी	12243	30434	24556	25047	25548
कुल सब्जी	283680	504409	603674	621691	640527

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

तालिका 10: मध्यप्रदेश में सब्जी फसलों का उत्पादन (लाख मीट्रिक टन में)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
आलू	7.43	18.17	22.99	23.22	23.45
शकरकंद	0.30	0.24	0.45	0.50	0.54
प्याज	10.22	21.77	26.91	28.26	29.67
मटर	2.51	4.52	5.34	5.61	5.89
टमाटर	3.47	13.50	18.45	19.37	20.34
फूल गोभी	1.09	5.77	6.90	7.04	7.18
कुल सब्जी	36.99	100.91	124.53	128.41	132.47

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

मसाले

भारत मसालों का भण्डारगृह के रूप में जाना जाता है जो कि मसालों और उनके उत्पादों का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक है। सौ से अधिक प्रजातियों के पौधे मसालों और मसाला उत्पाद उपज के लिये जाने जाते हैं। जिनमें से पचास से अधिक भारत में उगाये जाते हैं। पेड़ और बीज मिलकर मसालों की एक व्यापक किस्म है जैसे काली मिर्च, हरी मिर्च, अदरक, हल्दी, लहसन, इलाचयी। मध्यप्रदेश देश में लगभग 7.7 प्रतिशत मसाला और मसाला उत्पादों का योगदान देता है। राज्य में उद्यानिकी फसल के अंतर्गत कुल क्षेत्र में सबसे बड़ा हिस्सा मसाला फसलों का है।

मसाला फसलों में से मिर्च 22.1 प्रतिशत, लहुसन 17.9 प्रतिशत अदरम 2.4 प्रतिशत महत्वपूर्ण है। वर्ष 2012–13 में कुल मसालों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 5.39 लाख हेक्टेयर एवं 41.13 लाख मीट्रिक रहा है। वर्ष 2013–14 में कुल मसालों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 5.54 लाख हेक्टेयर एवं 42.33 लाख मीट्रिक टन रहा है वर्ष 2014–15 कुल मसालों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन क्रमशः 5.00 लाख हेक्टेयर एवं 43.57 लाख मीट्रिक टन रहा । प्रमुख मसालों के अन्तर्गत क्षेत्र एवं उत्पादन का वर्षवार विवरण तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका 11: मध्यप्रदेश में मसालों का क्षेत्र (हेक्टेयर में)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
मिर्च	68422	116479	140667	147700	155085
अदरक	9112	14399	25027	25528	26038
लहसून	54030	94945	96923	98861	100839
धनिया	169789	184527	188419	192187	196031
कुल मसाले	365850	468704	539170	554204	569799

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

तालिका 12: मध्यप्रदेश में मसालों उत्पादन (लाख मीट्रिक टन में)

फसलें	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15
मिर्च	0.85	6.37	12.75	13.39	14.06
अदरक	0.12	2.66	3.52	3.59	3.66
लहसून	2.42	11.50	11.51	11.74	11.98
धनिया	0.71	4.89	5.36	5.47	5.58
कुल मसाले	4.82	28.91	41.13	42.33	43.57

स्त्रोतः मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015

फूल

भारत में फूल के उत्पादन में विशेष रूप से निर्यात के लिये कट फूल के उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। चमेली, गेंदा, गुलदाउदी, रजनीगंधा और एस्टर जैसे पारंपरिक फूलों की संख्या बढ़ी है। कट फूलों जैसे गुलाब, आर्किड, ग्लेडियोलस, लाली, गेरबेरा, एन्थूरियम और लिलियम जैसे कट फूलों की व्यावसायिक खेती सामान्य है। सामान्यतया मध्यप्रदेश में उगाये जाने वाले फूलों की खेती का क्षेत्र और उनकी उत्पादकता निम्न तालिका में सूचीबद्ध की गई है

तालिका 13: मध्यप्रदेश में फूलों क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता (क्षेत्र हेक्टर, उत्पादन लाख टन, उत्पादकता मीट्रिक टन)

फूल		2012.13			2013.14			2014.15		
क्र0	फूल का नाम	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता
1	गेंदा	7386	0.81	10.97	7755	0.851	10.97	8143	0.89	10.97
2	गुलाब	2334	0.13	5.57	2381	0.133	5.57	2428	0.14	5.57
3	गुलदाउदी	762	0.1	13.12	800	0.105	13.12	840	0.11	13.12
4	ग्लोडिया	1960	0.38	19.39	1960	0.380	19.39	1960	0.38	19.39
5	नौरंग	946	0.16	16.91	1041	0.176	16.91	1145	0.19	16.19
6	रजनीगंधा	263	0.01	3.80	263	0.010	3.80	263	0.1	3.80
7	ग्लेडुअल	411	0.01	2.43	411	0.010	2.43	411	0.1	2.43
8	अन्य फूल	2453	0.33	13.46	2453	0.330	13.46	2453	0.33	13.46
कुल		16515	1.93	11.69	17081	2.00	11.72	17750	2.07	11.66

स्त्रोतः उद्यानिकी विभाग, मध्य प्रदेश– 2015

औषधीय और संगुधित पौधे

भारत में बहुमूल्य औषधीय और सुगंधित पौधों का खजाना माना जाता है जो स्वदेशी दवाओं के निर्माण के लिये कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं । 9500 पौधों की प्रजातियों को दवा उद्योग में महत्वपूर्ण माना जाता है। इनमें से 65 पौधों की प्रजातियों की दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में भारी मांग है। मध्यप्रदेश में ग्यारह सौ से अधिक प्रजातियों को जे.एन.के.वी.वी. जबलपुर में एकत्रित अनुरक्षित और प्रलेखित किया गया है। एक हर्बल गार्डन प्लांट फीजियोलॉजी विभाग, जबलपुर के परिसर में स्थापित किया गया है। अमरकंटक, चित्रकूट, सतपुड़ा, मण्डला और मध्यप्रदेश के अन्य आदिवासी क्षेत्रों के जंगलों से एकत्र औषधीय पौध प्रजातियों को हर्बल गार्डन में संरक्षित किया गया है। मंदसौर और नीमच जिले अश्वगंधा, तुलसी, इसबगोल, कालमेघ, अजमाइन, कलोंजी, चन्द्रसौर की खेती के लिये राज्य में प्रमुख जिले हैं। मध्यप्रदेश में उगाये जाने वाले मुख्य औषधीय और संगुधित पौधों की खेती का क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता निम्न तालिका में सूचीबद्व है।

तालिका 14: मध्यप्रदेश में औषधीय पौधों का उत्पादन, क्षेत्र और उत्पादकता, (क्षेत्र हेक्टर, उत्पादन लाख टन, उत्पादकता मीट्रिक टन)

		2012-13			2013-14			2014-15		
क्र0	ई–औषधीय पौधे का नाम	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता	क्षेत्र	उत्पादन	उत्पादकता
1	अश्वगंधा	4144	0.09	2.17	4144	0.090	2.17	4144	0.09	2.17
2	सफेद मूसली	686	0.06	8.75	686	0.060	8.75	686	0.06	8.75
3	इसबगोल	28997	0.23	0.79	29577	0.235	0.79	30168	0.24	0.79
4	चन्द्रसूर	7415	0.67	9.04	7415	0.670	9.04	7415	0.67	9.04
5	तुलसी	4702	0.09	1.91	4749	0.091	1.91	4797	0.09	1.91
6	कालमेघ	2759	0.52	18.85	2759	0.520	18.85	2759	0.52	18.85
7	पथरचूर	149	0.07	46.98	149	0.070	46.98	149	0.07	46.98
8	अन्य	13782	2.20	15.96	14471	2.270	15.96	15195	2.43	15.96
कुल		62634	3.93	6.27	63956	4.01	6.26	65617	4.14	6.31
कुल योग		1426641	227.77	15.97	240ण14	240.14	16.23	1518733	247.55	16.30

स्त्रोतः उद्यानिकी विभाग, मध्यप्रदेश– 2015

निष्कर्ष

भारतीय कृषि संरचना के अध्ययन से स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र में विभिन्न श्रेणियों के बीच में भूमि के स्वामित्व, नियंत्रण, आय और जीवन के तौर–तरीके संबंधी अनेक अंतर पाए जाते हैं। कृषि क्षेत्र में व्याप्त सामाजिक असमानताओं और इनके संबंध में जागरूकता के बढ़ने के कारण वर्तमान समय में कृषक असंतोष बढ़ता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों, काश्तकारों, पट्टेदारी में खेती करने वालों और भूमिहीन श्रमिकों के जीवन में अनेक अभाव पाए जाते है। उनके अस्तित्व की दशाएं विचारनीय हैं और वे जीवन की साधारण सुख–सुविधाओं से भी अधिकांशतः वंचित हैं। यद्यपि हरित क्रांति से ग्रामों की काया–पलट तो हुई है, परंतु इसका लाभ अधिकांशतः कुछ थोड़े से धनी किसानों को हुआ है। छोटे किसानों, काश्तकारों तथा भूमिहीन श्रमिकों की स्थिति में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है और विशेषतः बढ़ते हुए मूल्यों का इनकी भौतिक दशाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। मध्यप्रदेश में कृषि क्षेत्र की गतिविधियों को विशेष रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है जिससे कार्यक्रमों, गतिविधियों के क्रियान्वयन से अच्छे परिणाम आ सकें ताकि कृषकों की फसलों का उपर्जान उत्पादन अनुसार संभव हो सके। मुख्य फसल गेहूं के उपार्जन से कृषकों की आर्थिक स्थिति बदल सके तथा खेती की तरफ उनका रूझान बढ़े। कृषि क्षेत्र में उत्पादन को बढ़ाने के लिये बीज रोपण की पद्धति को वैज्ञानिक खेती के उन्नत तरीकों को अपनायें.यद्यपि कृषि उत्पादिता एवं उत्पादन को प्रभावित करने वाले आकस्मिक, प्राकृतिक कारण मानवीय प्रक्रम से परे हैं, फिर भी सम्यक उपायों द्वारा उनकी भयावहता को घटाया जा सकता है। अभी तो स्थिति यह है कि प्रकृति के साथ देने पर ही हमारी योजनायें सफल होती हैं अन्यथा उस वर्ष समस्त विकास कार्यक्रमों के परिणाम नगण्य हो जाते हैं। अर्थव्यवस्था का विकास जिस प्रकार कृषि का अनुकरण करता है ठीक वैसे ही कृषि अनुकूल व प्रतिकूल वर्षा का अनुकरण करती है। प्राकृतिक प्रकोपों के प्रति सजगता को हमारे नियोजन में प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए। यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि प्रकृति सदैव हमारे अनुकूल ही रहेगी। इसके साथ ही साथ जिन राज्यों में भूमि की संरचना और जलवायु कृषि विकास में स्थाई बाधक है वहाँ खेती के साथ–साथ संबद्ध व्यवसायों का विकास आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. साइमन, लेजली, कृषि भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल वर्ष 2003
2. साहनी, जी. एस. सिंचाई प्रबंधन में कृषकों की भागीदारी, मध्यप्रदेश शासन जल संसाधन विभाग, वर्ष 2007–08
3. साउथ–ईस्ट रिसोर्स, रीजनल प्लान समरी ऑफ प्रिलिमिनेरी रिपोर्ट : टाउन एंड कन्ट्री प्लानिंग आर्गनाइजेशन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2001
4. धुरन्धर, के.पी.: एग्रिकल्चरल ज्यॉग्राफी ऑफ मध्यप्रदेश, अप्रकाशित थीसिस, जोधपुर विश्वविद्यालय, 1865
5. सक्सेना, जे.पी.: एग्रिकल्चरल ज्यॉग्राफी ऑफ बुन्देलखण्ड, अप्रकाशित पीएचडी थीसिस, सागर विश्वविद्यालय, 1967
6. जोशी, वाई.जी. एग्रिकल्चरल ज्यॉग्राफी ऑफ दि नर्मदा बेसिन, अप्रकाशित, पीएच.डी. थीसिस, सागर विश्वविद्यालय, 1971
7. मध्यप्रदेश संदेश, पक्षिक पत्रिका, भोपाल
8. मध्य प्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण – 2015
9. मध्यप्रदेश उद्यानिकी – 2015
10. आर्थिक एवं सांख्यिकी, मध्यप्रदेश – 2014
11. आयुक्त, भू–अभिलेख 2014–15
12. रिसोर्स एटलस, मध्यप्रदेश संस्करण 2014
13. उद्योग व्यापार पत्रिका, नई दिल्ली
14. www.indianbusiness,nic.in
15. www.mp.gov.in/des